घोंघे की विदाई महाविलोप का संकेत है

घोंघे की धीमी चाल मशहूर है मगर लगता है जल्दी ही यह अतीत की बात हो जाएगी। एक अध्ययन के मुताबिक घोंघे ही नहीं, तमाम रीढ़-विहीन जंतु (अकशेरुकी जंतु) मानव-जनित दबाव में विलुप्ति की कगार पर हैं। कई लोग तो आज के युग में मानवों के ऐसे वर्चस्व के चलते इसे एंथ्रोपोसीन काल भी कहने लगे हैं।

संरक्षण विशेषज्ञों ने अनुमान लगाया है कि मानव क्रियाकलापों की वजह से हमारी धरती से प्रतिदिन 100 प्रजातियां नदारद हो रही हैं। यह लगभग उसी तरह का संकट है जैसा छठे महाविलोप के समय पैदा हुआ था जब डायनासौर खत्म हो गए थे।

अलबत्ता, विलोप की वास्तविक रफ्तार के आंकड़े मिलना बहुत मुश्किल है। आज तक हमने धरती पर तकरीबन 19 लाख प्रजातियों को पहचाना व नामकरण किया है। इनमें से मात्र 800 प्रजातियों के विलुप्त होने का पक्का रिकॉर्ड है। एक तथ्य यह है कि पहले मुख्य रूप से ध्यान रीढ़धारी जंतुओं पर दिया जाता है। अब कई शोधकर्ता रीढ़विहीन जंतुओं पर अध्ययन कर रहे हैं। गौरतलब है कि कुल प्रजातियों में 99 प्रतिशत रीढ़विहीन जंतुओं की हैं।

हाल में पेरिस के प्राकृतिक इतिहास संग्रहालय के क्लेयर रेनियर और उनके साथियों ने दुनिया भर में घोंघों की स्थिति का आकलन किया। इसके लिए उन्होंने विभिन्न स्थानों पर उपलब्ध आंकड़ों, संग्रहालयों में उपलब्ध नमूनों और विशेषज्ञों के अनुमानों की मदद ली। इस आधार पर उन्होंने अनुमान व्यक्त किया है कि घोंघों की कुल 200 ज्ञात प्रजातियों में से 10 प्रतिशत विलुप्त हो चुकी हैं। यह मानते हुए कि घोंघे इस मामले में विशेष हो सकते हैं रेनियर व साथियों ने अनुमान लगाया है कि समस्त अकशेरुकी जंतुओं के विलोप की दर 7 प्रतिशत होगी। इस आधार पर उनका आकलन है कि ज्ञात अकशेरुकी प्रजातियों में से 1,30,000 धरती से रुखसत हो चुकी हैं।

हालांकि अधिकांश संरक्षणवादियों ने इस अध्ययन का स्वागत किया है मगर सवाल यह है कि वास्तव में धरती पर कुल कितनी प्रजातियां मौजूद हैं। एक अनुमान लगाया गया था कि प्रजातियों की संख्या शायद 10 करोड़ है। मगर बाद में किए गए अध्ययनों ने इस पर सवालिया निशान लगा दिए थे।

मसलन, ऑस्ट्रेलिया के ग्रिफिथ विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने धरती पर कीटों का एक विस्तृत अध्ययन किया था और अनुमान लगाया था कि कीट प्रजातियों की संख्या 26 लाख से 78 लाख के बीच होगी। यह पूर्व अनुमानों से कई लाख कम है। इसी प्रकार से समुद्री प्रजातियों के डैटाबेस के विश्लेषण के बाद 4,18,000 प्रजातियों की सूची घटकर 2,28,000 रह गई थी। कटौती का मुख्य कारण यह था कि विभिन्न शोध पत्रों में एक ही प्रजाति को कई नामों से चिंहित किए जाने के कारण दोहराव हुआ था। घोंघे की एक प्रजाति के तो 113 अलग-अलग वैज्ञानिक नाम निकले थे। ***(स्रोत फीचर्स)***